Definition of Museums

संग्रहालय (Museum) का अर्थ

संग्रहालय के लिए अंग्रेजी भाषा के Museum शब्द का प्रयोग किया जाता है। इसकी विषय-वस्तु तथा परिभाषा भिन्न-भिन्न समयों पर बदलती रही है। पर यहाँ हमारा अभिप्राय है केवल Museum शब्द के अर्थ से।

Museum शब्द लैटिन भाषा का है जो यूनानी शब्द Museion से लिया गया है। इसका अर्थ कला तथा विज्ञान की सामग्री का संग्रह स्थान नहीं होकर यूनानी देवी Muses को समर्पित मन्दिर था जो विज्ञानों और कलाओं की देवी मानी जाती थीं। पहले इन देवियों की संख्या तीन थी जो पीछे बढ़कर नौ हुई। ये ओलम्पस पर्वत को घाटी पियेरिया में पैदा हुई थीं। इनमें प्रत्येक कला, साहित्य और विज्ञानों की एक शाखा की प्रधान थीं, जैसे— क़ैलियो काव्य, कैलियो इतिहास, यूटली संगीतमय काव्य, थालिया ग्राम्य गीत और सुखान्त, मेहपोमिनी दुखान्त, टणीकोर संवेत गीत एवं नृत्य, हरारो प्रेम गीत, पाली फाइमीनिया पूजा गीत और यूरैनिया खगोल की। अतः इस ज्ञान के केन्द्र— Museum की अवधारणा ज्ञान का खजाना है जो प्रकृति और मनुष्य के ज्ञान की विभिन्न शाखाओं का सम्बन्ध इन्हीं ज्ञान की देवी के साथ जोड़ा है। इसी से Museum का अर्थ बताया गया है— Temple of Muses (ज्ञान का मन्दिर)। यहाँ मन्दिर की तरह पूजा नहीं किया जाता है पर सांसारिक उधेड़ बुन से मनुष्य त्राण पाता है और सीखता, चिन्तन करता, पवित्र जीवन की ओर बढ़ने की प्रेरणा पाता है। चूँकि Museum एक ज्ञान का केन्द्र है इसलिए यह व्युत्पत्ति अत्यन्त उपयुक्त है। भले ही प्राचीन यूनानी लोग जिन कलाओं और विज्ञानों को नींव रखे थे उनमें भावी पीढ़ी ने इतना कुछ जोड़ा।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि यूनानी मिथक के अनुसार ओलम्पस पर्वत की घाटी में पिता जियस (zeus = यूनानी देवाधिदेव) तथा माता नेमोसीन (Mnemosyne = memoiry= स्मृति) से नौ बहनों— Muses का जन्म हुआ था जो अपने नृत्य और संगीत के द्वारा लोगों के दुःख और चिन्ता को भुलाने में सहायता देती थीं। इस प्रकार ये दोनों पक्ष पवित्र मन्दिर तथा शिक्षण संस्थान एक में मिल गए और उसी के समन्वित स्वरूप को Museum (संग्रहालय) कहा गया जहाँ पहुँचकर मनुष्य अपने सारे सांसारिक दुःख और चिन्ताओं को भूल जाता है और आनन्दपूर्वक ज्ञान की प्राप्ति करता है। Muses के स्थान को ग्रीक भाषा में MOVOEIOU कहते हैं। इससे दो बातें ज्ञात होती हैं— एक प्रेरणा देना तथा दूसरे एक ऐसा स्थान जहाँ मनुष्य एकान्त की अनुभूति करता है जिसमें उसको दैनिक जीवन की घटनाओं से छुटकारा प्राप्त होता है। वास्तव में वहाँ वह सजीव के साथ नहीं निर्जीव अतीत की सामग्रियों के साथ होता है जहाँ उसके दुःखमय जीवन की यादें उस समय भूल जाती है। ये मूक सामग्रियाँ उसे मूक भाषा में गौरवपूर्ण अतीत तथा अपनी विरासत की ओर बढ़ने की प्रेरणा देती हैं। वहाँ वह अकेला उनकी भाषा समझता तथा उनकी पहचान और व्याख्या में अपने को भूल कर एकान्त की स्थिति में आत्मविभोर पाता

है। यही स्थिति है निर्द्वंद्वता तथा अज्ञात से एकाकार करके अपनी विरासत से जुटने की। यह पूर्णानन्द की स्थिति होती है।

Museum की शाब्दिक व्याख्या करते हुए **उषाजैन** तथा **चारुस्मिता** ने निम्न विवरण दिया है :–

M = Man's (मनुष्य का)
U = Utilization (उपयोगिता)
S = Surrounding (वातावरण)
E = Exhibition (प्रदर्शन)
U = Understanding (शैक्षणिक ज्ञान)
M = Mankind (जन-सामान्य)

संचय और संग्रह ये दो शब्द प्रायः व्यवहार में पर्यायवाची के रूप में प्रयोग किये जाते हैं। पर दोनों में भेद हैं। संचय से अभिप्राय है किन्हीं वस्तुओं को एकत्रित करना। इसमें उनको लेकर बिना क्रम में बिना किसी विभाजीकरण के किसी भी प्रकार बेतरतीब भी इकट्ठा करने से अभिप्राय है। पर संग्रह इससे भिन्न है। इसमें उन वस्तुओं को विशिष्ट अनुपलब्धता (rairities) के आधार पर एकत्रित कर एक क्रम में रखना तथा उनके विषय में विशेष जानकारी प्राप्त करना होता है। यह एकत्रीकरण भविष्य तक के लिए किया जाता है तथा संभाल कर, व्यवस्थित करके उन्हें सुरक्षात्मक रीति से बचाकर रखा जाता है तथा उनकी देख-रेख बराबर की जाती है कि उनमें प्रदूषण के कारण कोई दोष न उत्पन्न हो जाय। संचय एक समय अवधि के लिए होता है पर संग्रह स्थायी होता है। ये वस्तुएँ इस रूप में जहाँ रखी जाती है उन्हें संग्रह का स्थान (आलय) संग्रहालय कहा जाता है।

इस प्रकार संग्राहलय (Museum) का अर्थ हुआ वह स्थान जहाँ मनुष्य की उपयोगिता की वस्तुएँ जो वातावरण के अनुसार इस प्रकार सुरक्षात्मक रूप से संग्रहीत की जाती हैं तथा वे प्रदर्शित की जाती हैं कि उनसे जन-सामान्य जीवन के विविध आयामों का ज्ञान प्राप्त किया जा सके।

संग्रहालय की परिभाषा

संग्रहालय को विविध रीतियों से लोगों ने परिभाषित किया है। समय के साथ इसकी परिभाषाएँ भी बदलती रही हैं क्योंकि इसके प्रति लोगों का दृष्टिकोण परिवर्तित होता रहा है। जैसे-जैसे दृष्टिकोण विकसित होता गया वैसे-वैसे परिभाषाओं का स्वरूप भी विकसित होता गया। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है कि International Council of Museums — ICOM ने 23 वर्षों में अपनी परिभाषा को चार बार बदला है। यहाँ कुछ प्रमुख परिभाषाएँ दी जाती हैं :–

(1) *'A Chamber of Rarities'* — **D. F. Neickelius** (1729)
(अनुपलब्ध सामग्रियों का संग्रह स्थल)

(2) *'Museum a study or Library'* — **Nathan Baily** (1737)
(संग्रहालय 'अध्ययन' या 'पुस्तकालय' है)

पर ये दोनों ही परिभाषाएँ अधूरी और एकांगी हैं क्योंकि मात्र इसका उद्देश्य दुर्लभ वस्तुओं को एकत्रित करना नहीं होता तथा यहाँ कोई कक्षा नहीं होती, न पुस्तकों का भण्डारण मात्र होता है जहाँ बैठकर पाठक पुस्तकें पढ़ें। इनसे भिन्न भी इनका अनेक उद्देश्य होता है।

(3) *संग्रहालय न कोई यूरोपियन इमारत है न बहुमंजिली स्थापत्य राष्ट्रीय सम्पत्ति, बल्कि एक अमेरिकन पद्धति है जो जनता की, जनता के लिए और जनता के द्वारा हैं।*—**एल० बी० कोलमैन**

यह भी अधूरी और अनुपूयुक्त परिभाषा है क्योंकि इसमें उद्देश्य नहीं दी गई। कोलमैन द्वारा इस परिभाषा में संग्रहालय को अमेरिकन पद्धति कहकर इसको अधिक संकुचित बनाया गया है।

(4) *Museum is an insititution for the preservation of those objects which best illustrate the phenomena of nature and the works of man for the utilization of these in the increase of knowledge and for the culture and enlightenment of the people.* —**Sir Ashutosh Mukherjee** (1913)

(संग्रहालय प्राकृतिक तत्त्वो तथा मानव क्रियाओं का संग्रह संस्थान है जिसका उपयोग ज्ञान के संवर्धन तथा जनता के सांस्कृतिक और बौद्धिक विकास के लिए किया जाता है।)

यह अधिक स्पष्ट है। पर और भी स्पष्ट है—1913 में इण्डियन म्युजियम के उद्‌घाटन भाषण से उद्धृत **पं० जवाहरलाल** नेहरू का कथन कि 'संग्रहालय मात्र पुरानी वस्तुओं के देखने का स्थान अथवा अजायब घर ही नहीं है अपितु देश की शैक्षणिक व्यवस्था एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के प्रमुख अंग हैं। इतना ही नहीं, वे सार्वजनिक शिक्षा के स्थान हैं।'

(5) '*...A non-profit making, permanent institution in the service of society and of its development, and open to the public which acquires, conserves, researches, communicates and exhibits, for purpose of study, education and enjoyment, material evidence of man and his environment.*'

—**ICOM 10th General Session 1974.**

(... एक लाभरहिन, स्थायी संस्था जो समाज की सेवा और इसके विकास में लगी है और जनता के लिए खुली है, जो प्राप्त करती है, ठीक से रखती है, शोध करती है, जनता तक उसे पहुँचाती और प्रदर्शित करती है। इसका आशय है मनुष्य के वस्तुनिष्ठ प्रमाणों और वातावरण का अध्ययन और परिवेश को उजागर करना।)

ऊपर के विवेचन से स्पष्ट है कि *'संग्रहालय मात्र वस्तुओं का भण्डार गृह है'*—एक अत्यन्त पुरातन परिभाषा थी। अब इसके साथ शोध की बात भी जुटी और यह भी माना गया कि प्रत्येक वर्ग के लोगों की पहुँच यहाँ सुगम है जो वहाँ जाकर अपना ज्ञानवर्द्धन करते हैं। किन्तु यह विवेचन भी इसके स्वरूप को पूरा व्यक्त नहीं करता। वह भी हाल के बीते पीछे के समय की बात थी। आज इसका क्षेत्र पहले की अपेक्षा बहुत विस्तृत हो गया है। फिर भी आधारभूत तीन बातें ऊपर की सभी परिभाषाओं में सामान रूप से संग्रहालय के विषय में ज्ञात होती हैं:–

(i) संग्रह

(ii) शिक्षा

(iii) मनोरंजन

पर ICOM ने इसकी बढ़ती परिधि के अनुसार जो परिभाषा दी है उसमें कुछ और नई बातें सम्मिलित की गई हैं जिनसे वर्तमान काल के इसके स्वरूप का एक व्यापक ज्ञान प्राप्त होता है। इसमें अब जुड़ गई हैं निम्न नई बातें :–

(i) पुरानिधियों को सुरक्षित रखना तथा उन्हें प्रदर्शन वीथिकाओं में क्रम से सजाना।

(ii) प्राकृतिक, पुरातात्त्विक और विकासात्मक शरीर संरचनाएँ एवं क्षेत्रीय एवं ऐतिहासिक स्मारक (monuments) तथा संग्रहालय की प्रकृति के अनुरूप क्षेत्रों से उपलब्धि को प्राप्त करना, संरक्षण करना और जनता के लिए उसका संचारण-प्रदर्शन करना इसका धर्म बन गया है।

(iii) वे संस्थाएँ जो जीवित रूपों को प्रदर्शित करती हैं जैसे वानस्पतिक उद्यान, जन्तुशालाएँ आदि भी इसके साथ जुटी होती है।

(iv) प्राकृतिक सम्पदाओं को एकत्रित रखते हैं।

(v) वैज्ञानिक तथा खगोलीय ज्ञान केन्द्र का कार्य करते हैं।

संग्रहालय के बदलते परिक्षेत्र में कुछ अन्य बातें भी जोड़ी गई हैं जिनका संक्षेपीकरण SMART शब्द से किया जाता है। इस शब्द के अक्षरों की व्याख्या निम्न है—

S = Simple (साधारण या सामान्य)
M = Measurable (परिमाणीय)
A = Achievable (उपलब्द्धता)
R = Result Oriented (परिणाम आधारित)
T = Time bound (समयबद्धता)

ये पाँचों बातें संग्रहालय की क्रिया के आधार हैं।

इस प्रकार स्पष्ट है कि इसकी वर्तमान परिभाषा में पुस्तकालय, अभिलेखागार, पुरातात्त्विक एवं नृशास्त्रीय सामग्रियाँ और क्षेत्रीय सामग्रियाँ, वानस्पतिक उद्यान, जन्तु संग्रह क्षेत्र, खगोल और विज्ञान शोध केन्द्र इसके उपांग बन गए हैं। यद्यपि पहले पुस्तकालय, अभिलेखागार, क्षेत्रीय प्रदर्शन, वानस्पतिक उद्यान, जन्तुशालाएँ आदि भारतीय संग्रहालयों की परिसीमन के बाहर थे जिन्हें आज इसमें जोड़ दिया गया है। इस प्रकार हम कह कहते हैं कि सभी कुछ जो जीवत या निष्प्राण हैं तथा जिनका उपयोग दृश्य शिक्षा (visual education) के लिए किया जाता है, संग्रहालय के संग्रह की परिधि में आते हैं।

यही कारण है कि संग्रहालयों की क्रियाएँ जहाँ अब से पहले केवल तीन थीं :-

(i) संग्रह
(ii) संरक्षण और
(iii) व्याख्या

वहाँ अब उसमें एक महत्त्वपूर्ण अंग और आकर जुट गया है :-

(iv) शिक्षा-शोध तथा जनता को इसके द्वारा ज्ञान की सूचना देना।

अब इसके साथ भी कई कार्य माध्यम अपनाए जाने लगे हैं जैसे—वीथिका प्रशिक्षण, भाषणमाला, विविध प्रकार के पुस्तकों आदि का एवं संग्रहालय द्वारा अपनी सामग्रियों तथा दूसरी समप्रकारीय सामग्रियों को संदर्भ रूप में प्रकाशित कराना आदि।

इसीलिए अब कहा जाता है कि—

The museum is a fountain of knowledge and a temple of learning. A museum is an educational institution and cultural centre too. —**A. C. Bhaumick**

(संग्रहालय ज्ञान का स्रोत है तथा सीखने का मन्दिर है तथा यह एक शैक्षणिक और सांस्कृतिक संस्था भी।)

'A house of collection for education'.

(यह शिक्षा के लिए संग्रह का घर है।)

अतः वर्तमान परिप्रेक्ष्य में संग्रहालय ज्ञान की एक बहुमुखी संस्था है। एक समन्वित (Composit) संग्रहालय में प्राकृतिक इतिहास, नृशास्त्र (Anthropology) पुरातत्त्व (Archaeology), इतिहास, सभ्यता, संस्कृति, उद्योग, शस्त्रास्त्र, कला, विशिष्ट लोगों की जीवनी, घटनाओं का चित्रण, पशु-पक्षी जीवन, जीव-जन्तुओं का विकास आदि अनेक सामग्रियों का संग्रह होता है। जहाँ ऐसा नहीं है वहाँ किसी एक पक्ष की सम्पूर्ण सामग्रियाँ संग्रहीत रहती है। ये सामग्रियाँ मात्र संचित ही नहीं रहतीं वरन् अपनी वीथियों में अपने परिचय कार्ड (introductory lebels) के साथ सजाई रहती हैं तथा एक क्रमबद्धता में रखी जाती हैं कि दर्शक उन्हें देखकर उनका क्रमिक विकास तथा उस विकास की कड़ी के बीच सहसम्बद्धता का सहज ज्ञान प्राप्त कर सके चाहे वह शिक्षित हो या अशिक्षित। इससे मानव जहाँ एक ओर सुसंस्कृत बनता है वहीं उसमें ज्ञान का प्रकाश फूटता है। इस प्रकार प्रत्यक्ष ज्ञान दान की एक संस्था के रूप में आज इसे विकसित किया जा रहा है। *In modern sense, the museum may be defined as an institution for the preservation of those objects which best illustrate the phenomena of nature and the works of man and the utilization of these for the increase of knowledge and for the culture and enlightenment of the people.*

— **Dr. S. T. Satyamurti** (Administrative Problems of the Indian Museums)

(वर्तमान परिप्रेक्ष्य में संग्रहालय संरक्षण की संस्था के रूप में परिभाषित किया जा सकता है उन सामग्रियों का जो प्रकृति के तत्त्वों तथा मानव क्रियाओं की व्याख्या करते हैं जिनकी उपयोगिता ज्ञान विवर्धन और संस्कृति तथा व्यक्ति के गौरवान्यवन हेतु किया जाता है।)

इन विविध परिभाषाओं के पीछे मूल कारण रहा है कि संग्रहालय की आधारभूत मान्यताओं में सदा परिवर्द्धन होता रहा, इसके उद्देश्य विकसित होते रहे तथा विचार बोध की परिधि भी बढ़ती रही है। आवश्यकतानुसार संग्रहालयों के प्रकारों की बढ़ती श्रेणी, नई विधियों के उपयोग की व्यवस्था तथा इसके संग्रह की सीमा में नये आयामों का जुटना और नई शैक्षणिक, शोध, जनसम्पर्क आदि क्रियाओं का समन्वय एवं प्रचार प्रकाशन से इसे जोड़ना इसको नई दिशाओं की ओर आगे बढ़ाता जा रहा है। आज संग्रहालयों में सांस्कृतिक आयाम के सभी पक्षों, वस्त्र, अस्त्र, लोक-कला के चित्र, कलाकारों का विवरण, साहित्यकारों का चित्र और विवरण, पुरातन हस्तलिखित पोथियाँ, अतीत की विशिष्ट सामग्री निर्माण के उपकरणों, गृह प्रयोग की विशेष घराने की सामग्रियाँ आदि भी बहुत-सी चीजें जोड़ी गई हैं कि लोग अपने बीते कल तक के सामान्य और विशिष्ट परिवारों और क्रिया-कलापों से परिचित हो सके।